

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.



वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: प्रस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ५१६५२२२(२२२)

ग्रंथ नाम अभंगांचे बाड.

व कनिता. १/१ सुरा कागद.

विषय मराठी काव्य.

(1)

तीई देवाची मांडणी जाळी ॥ या हुनी परती
 माथानीरुती नीलरूपदेकीली ॥ लुया नामवा
 री जीली ॥ हे की रे माया आकार सखीया
 सदगुरुदेती धरून ॥ ४ ॥ शुनी लवकत
 सुंदर स्वेलम ध्व दसेवे द्वार ॥ परवं सुचे म
 दीरा ॥ तेज दीरी पोलाकली नवरंगप्रकाश
 रंग आली सर्व ॥ विश्वव्याप्त प्रकाश
 गुणप्रगठदीसे ॥ आशा नासी
 नकळधारे सध ॥ धरणी स्वार्थनी
 ध्याला गुरुचे ॥ सुनी रसील नी
 ॥ प्रकास केला दीन गुणवत् आवं रदीदल
 भरूनः ॥ ५ ॥ धुधुगलावनी ॥
 पाहा रूप केस मनागर हा स्वकी जो का ॥ कुसा
 पुठम ली गुरुची रंगसा नका ॥ ६ ॥ ५ स्वयं
 ह्या कायापुरं ॥ चवदां जाका पुचाउ ॥ मने
 रे येक थीस स्व र गा न र



(3)

ये धात्रीवानीने थे झाली कुटीर ॥ पुढे
 लीधबोले (आबोले) रैकासत ॥ नवरंगी
 हेकसीरुन आदभुता ॥ ब्रह्माईष्णुमैस्त
 नहालीरु सुररंवा ॥ नरुगसमादीमुद्रा आ
 सनयुक्तन परगटे चीनेचीकेले आंहु
 मैदानाजा हेरुनगीधसंजाची हे व
 आगका ॥ ७२ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥
 युगका ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥
 रीष्टलीष्णकरप ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥
 रुद्रनीखयांल ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥
 ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥
 ब्रह्मीचीटेव आरुटपीटची वस्वी शुभला
 धव ॥ हेमनाची आर धना प्रासीधसखा
 लीजवा रुनी झाले बावा लीनीदेव ॥ हेरौरी
 रची मुकपाहा आनु नैव ॥ आमेकल
 नीजमा या हेनेनावा ॥ चीद्र धन दसवे
 व्या रमने ग...

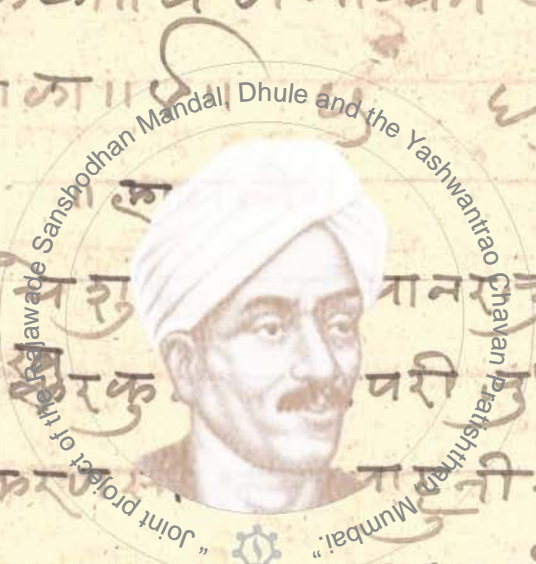


मने नी धन करी बापा दूरी दुःख भाव
गे सा श्रम छे दू नाथ रूताः ने दे व सम
बुधी नी स्छे च खान मूना वा व ॥ हे व चैन
सने गुरु चे ने द आ ग का ॥ आ भे द
इना लू के दन वे द क की का का ॥ ३ ॥

आ र धे मा भे ये ले धन इ जे ले दे ह ये नी
र हो ना आ का ॥ इ दे ये ले न
हा जो लू का ॥ न दे हा नी त व
स्तु नी र गु ॥ वे ॥ गु जा ॥ उ धे उ चे
अ हे पा हा स ह स ॥ मे या चा व गर
न र ल ची न मे नी जा ॥ व न यु क नी चा वा
लू क दान सा जा ॥ को ट ये दू लू र या चे
ले जा नी जा वी जा ॥ आ मे प क का फा क
ल या दी वे ले जा ॥ प्र क स स र वा व री ना हे
दु जे ॥ से क या वे ह या चे क थ आ वा का
जा ॥ वे वा चे उ ट ले व न थ क मे सा जा ॥



चक्रं च जगदेस्वर कोन उमा तेजा
 र्णा वर जं गन रुना पुरन हारा ज
 या लची सर व आहू की ज ॥ या वचेनी
 नै नाही धाहू पेज ॥ हे पाहुनी म्हादवनाय
 मनीमोकका ॥ व र्ण नाश्रम उा चेरसने
 नाही कं टा का ॥



जे जन मां य शु रानर पुन सां चडुलीः
 राजकुटी रकु परी तुं जल झाल
 ॥ ६४ ॥ पच करण तुनी स्थु कदे हे
 उभासी हे ताच पच गुन पच वी से हे आग
 मनी गमने हे ॥ च व द च के वा वन मा
 युका सा धन स खे ल ॥ वी उा पी गल
 मार ग सा शु शु न्मा स म धी रु क र व डो हे ॥
 चा हा दे हे दो धी रु ना सी वं न हे नै ये नी
 ज व स रु ॥ वी च्यारु नी जो हे नी

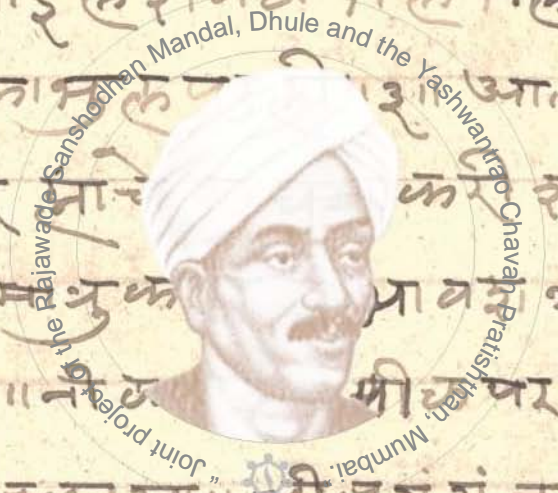
शुद्धे मी देहे आ इया रणे तु ॥ की च्या रूनी
 यामनी गजलं गजला की च्या रूनी मनी गुरु
 की ली ॥ १ ॥ आला जे रान धन राना ध्ये करु
 न धे नी जव रूनु आपु ली ॥ दुगदु राना धी
 सल गुरु राना धे ये बो स जी ली मा ये ॥ शुद्धे म
 इया ज करु ने दे की म म पु या ये आ ग ६
 द्या कुल म न र्क न्य य ॥ रं ग र सु
 र ग कर पु र स जे ल त्रे हे ॥ स्व प न
 उवा व र न्ना व र्क म प न्ना शी वं न्ना ॥
 ती र कु धी ब्र म्ह र ग ल जी ल ॥ आ ले बो ल
 ले र्नी धां ल ॥ ये द सु रू नी ची न क न
 लो ले द श्व ती ची हे ची बो ॥ २ ॥ अ न्ना ची
 कार नं दे हे आ ध पर व ती शा म न तु ज्या
 चा ॥ रु द्रे द व न्ना प र भा पा क्की पर व र -
 णां ती ची र तु लु प न ले थे पु र्ण आ व र्णा



Joint Project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Ashwantrao Chavan Pratishthan Mumbai.

(१)

स्युन शाः नाची ॥ ताम सगुन की आंगी चि
 नम क जाचे खलंयाची ॥ मकारमा शुका
 " एक सगुना आबधा आना स ॥ परीने
 प्रती की वच आशे ॥ प्रमानका यक्षरीत
 या न ॥ जाइ लुके वदी गल गल जाइ लु
 शे वदी का मल प ॥ ३ आनाची मा
 कारण दे माने करि शी श राया
 आरधी म शुका जा वने थाना म का
 रे लुरया ॥ नै क श्री क पर ना लघा र्थ
 म शुरे वल का या ॥ श्री न गं गं नची स्वरु
 पे आ भाशे परी नी ज मा या ॥ प्रती भी वा
 ये प्रमान का म आं लर शा धो वे ॥ वीं व
 जे रवेर करु ल धा वे ॥ गुरु लो शर नरी
 धो व ॥ भा व धर मनी म ल की ला म व धर
 मनी च दु की ॥ ५ ॥ ध



कोदवाठी गलातुनी हरी: धरीकरी ठीप उलट्या
 दी ही ग आ दई केले गुरुनी: दाकनीकी ई रयाची
 खाना प्रकास जात) गहना ससार अता काई
 कोळने उरले नाई पाण आवीकोलेने आवध
 खल ग का करी तावर्थ यावटा वाग ज्ञानासी
 मार्ग दापटा आज्ञाना पद पाटन वाप
 नी कुठा यरी गा ल आठ पीठा वा
 वाग दा नवाठ. वाटा थक आह गुढ
 मुड आवाहा वा राजवाणी ग गुरुची
 की लुगी ग आता आसा हरी पीरनी ग
 का ब्रह्म ता माणु शंपना ग दई चदेव आसा
 वर्ध पुजा पो साना। याच्या याच्या सीमनात वड न
 ना का जाणुन हाता मुड: ग वाशा सद गुरु व
 धरी ल करी ग ने ल हा नी जम दरी ग वाप
 पो दा भवं ना च्या वरी ग ब्रह्म रं फा सा
 जरी ग वाग: प्रकास अता वाच सी ग नाई उ
 ती वरा वरी ग वा: सम समाये सगळी जतन



ध्यान आवधनी राकरो म बोप जाला मोदरा
 सरला भदा पुणनिंदना च चंदे एकसा प्रमदु
 नावलाग आठवनाई देयालाग देहसुकसुका
 वलाग सुकातवाल प्रायगवालन तवपुरात
 कायः गवाग उपसुकसा गावनयेः ग मोहन
 धरीक माया बाग वदु च गलाक देहा
 मानवकी सुकन गला धाराज
 लु पाय गजाल नी जायः गवाग
 ते से नथी वधी गया सगलकी
 कीराल आहः सवा गला वाहा प्रपच
 आहाकरने त आहा गुमजक सा आहा
 आह्ये सगलकी असो ॥ दुसर तवकी मपी
 नस गका का मुनी धो ग पीस ग पाहा कसा
 उभाश उभाश सगलाकी गमन गाभा
 काई ग षण गुण गावया सी देवप गला
 काई काठ देवनी राका मलाः च



Joint Project of the
 Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

पायी तत्र ये कथी मलाग बलया कीत आ
नधागालागधाम तसमान ज्या जा डालाग
ता पुणी ब्रह्म पुतकाः गधोग थोग्याची आ
गदलीकाग ग्रासीलया धाराभागा। धाम
हची साधना पुण अंजन म आ द्रय ये लने

॥ सद गुरु सुण कर्म प व पुण उदेतः ग का

तनीलया अघो : सभा च देकर

आलाग आने न आलाग नाई उर

ला मधनाथा ले : धृष्ट धृष्ट धृष्ट धृष्ट

पुलावनीप " आद सुत के सान

वत समास्या गुरु दा कवी जे लाग लवनाची

मासो की जीवनी धे ती उलाकाः धृष्ट

आणी केय कस्या नवकेद कीके उपरोठ्याडन

काकी से जा वर ती शुड रया ह्या का वन रेवेष्टन

रायगाधर जीव धालुन वरम सवे धोडे र



छे जी वरत साय रा या ची लया चा का पेः

गुरु कुपवीणा कदा कलेना अर्ध आयुः ३ प ज्ञान बो
 द आस्त गड हो नो ये अड अडः पद या गुरु ची पुर्ण
 जवा चरी तो जगे के काः प वा ची र उवा का सी मोटे
 चा क ली क सी रे पा ता की ग ली न फा ट प्रा नी का हा ले
 कु पी क क या के की र स वा ले री गणी ल फ ला ची
 हो ती नी ल का क रीः प री म का धा कु नी
 वर स स का म को प वा पी न पा नी न वे क
 की वरे का पे चा क की र न की ग व सु न क
 सा गं ग न पे क की र गुरु कुपु री क ग ज्ञान ती ये रा हा
 गे की ग ज न्ता ये तु नी ये र्ध ची जा की प शु हो म ड ती
 प आ मु न जे लो वे र्ध ज्ञा प डी का आ की सु ब की ग
 ग न र्द या सी हु बु न का का क पे के की रु कीः प
 गुरु कुपे चा री पे ल ग का ता ज गे न वी र का र म्
 वृ क्षा मा था प क्षी ये ग का ना री ता ज्ञा त पा ये प



जो जीपी न चारा चो नव कहो पाये न नीतो
 डी येक मासी देरवी की ती गंगं नरना ये: आंभी
 प्राधा पीक पीक नव कहो पाये: च बीन दारा
 चा प्रजन धर्मा विषो नसे गोये गंगं न गर्ज
 ना पी जने ये ना दरी दारा धायो आणी कचुक
 प्र्यानव के दे नव दे नव पाये: मुक उरुप
 ले दरपन की नक नयार उरुके वरके
 उरु कुपे नक काय च सख
 सखे हो सखुं नक नके नको ये च
 पाता की च पाता नरुगी जायो डोका
 पासु नी पयन प्र सवके त जं सपायो सदगुरु
 राधा प्रकास कुकी सखा का नू प्र आणी क
 प्र्यानव के दे की के कात नी तां दे च यो च के के
 जाके ती न के न गे की के जातु: ग मा गी
 जावया जा गा गाई जे सानी वातु: ग सा दु
 स गत मुनी जन योगी यो पा ये का पु म्



वेदपुराणे सासारे पाउने जाकी तळेतुः ॥ पुरवा
 मनोरथतवाती सायनी जयस्तुः ॥ येकावरती
 येकआदकती पाहा दीवसरा तुः ॥ नादउठगा
 श्रीरुक्सीको ये वंदु मां तु ॥ आन्ना दक्षाकी ये
 कयेककी सांगे सरकगारु ॥ नादनसतास
 वरुठेत्या च नाव सा तु ॥ सतसंजना
 वस्रकेकळ सं जं ॥ यानि चरवीसा
 वापनाथ जाके नी ॥ सा राया प्रकार
 रूपा धरके कर ॥ ११ ११ ११ ११ ११

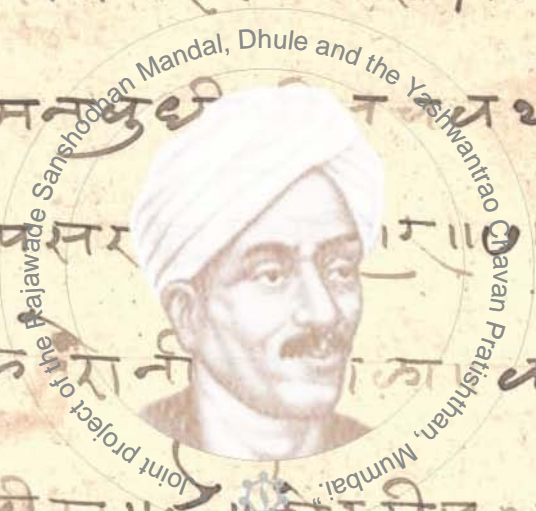


Joint Project of the
 Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

॥ आभंग कीष्ट प्रभुराज ॥

गुह्यायेनी जगु ह्ये वेदा आगेचचा ॥ तंकेले
 गाचेरश्री गुरु सं ये ॥ १ ॥ शुन्याचा शेवट
 वीस्वाचे मुकपीटा ॥ जे मुनी प्रगट ॥ ३०
 कारंहा ॥ २ ॥ साचा ह्यलक्ष झां ह ली न्ही
 गुना ॥ साक्षरचे धे जने ये दच्यारी ॥ ३ ॥

शाही शास्त्रे उगानी आठरा सुराने ॥ जे थुनी
 नीरमान झाली सर्वे च्या ॥ आपले जप
 थकी जाये आनी नभ ॥ नी राहूंनी
 को वन झाले पाच ॥ ५ ॥ पाचो चै गुन झाले
 पचवीस ॥ परी लेनी राजा शी वेगळे
 ची ॥ ६ ॥ मन बुधे न प्रथा हुंकार
 दावी लापसर ॥ ७ ॥ वीस थ
 इद्रय करानी ॥ ८ ॥ वासेन चामे
 कामी कवीला ॥ ९ ॥ शी तुरी पुधा लुनी शी
 शी राणी नरी ॥ प्रची भांची देरी आपुले
 हाली ॥ १० ॥ पंचप्राण च्यारी देहे के लुचये
 अहोसो हां भाते लावीली ॥ ११ ॥ पु
 फुंकी लोको कोन आनी क दु सरा ॥
 वधुन सुतपु धन क ले ॥ १२ ॥



Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

उत्तीसत वाचा पीठ उभासी ला ॥ चालवी तो या ला

कोन अला १२ ॥ सुक्ष्म जीद सा प्रवेशा आतरी

॥ चलन होला सारीया आनंद की ॥ १३ ॥

दहाती ये समयी म्हनती गे लागे ला ॥ मरना

चा आला आक कोना ॥ १४ ॥ जन्म म्हते पाप पु

णे करी कोना ॥ १५ ॥ धन जगा चोया ला

॥ १६ ॥ दानी का उ ॥ १७ ॥ मज्जु राजा ॥

वी श्वाच मुकी ॥ १८ ॥ क जे ॥ १९ ॥ ५५

आव्य ल्का च वल सा ॥ २० ॥ सी दो वा ॥

आइ ला सी कोन जागवी क ॥ २१ ॥ नी भ्रासा चा

वाई के वी जाका भ्रम ॥ के का हा भाव भ्रम क

स्वासाही ॥ २२ ॥ आकारा च तेथे काय हा ते का

॥ २३ ॥ नी रा का ब्रह्म सुकी हाते ॥ २४ ॥ ये कळकळ

सी काय न गम मरुनी आ ब्रह्म ध्वनी

उटवी की ॥ २५ ॥ नी रा लं वी आ गा जे वी क



Project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

जेव्हा ॥ कुट्ट तेव्हा तेथे होता ॥ १७ ॥ ~~मामुनी~~
 २ ॥ कोकी २१ ॥ गाजवीकी ईछा जाकी ॥
 काव्हा ॥ आमना सी कामना कोभा गुणी १५
 रूपा वीणा कैसी जाकी देवा ॥ म्हण सी केसे का
 आरूप सी ^{२५} ब्रह्म वीष्टु रुद्र माया देवी व्यापीकी ॥
 श्रिता वीण जाके धाले कैसी ॥ ३ ॥ करुणी
 कर तुल्य मन वीसा नीराळा ॥ प्रब्रह्म नीरमळा
 मळनाई ॥ प्रापुनी ^{२५} गंधा दुनी रगा ५
 कलला सी न सं ^{२५} वाः १८५
 जाला आमु ^{२५} ज ॥ न गुण्य गु
 सागी लन ॥ २५ ॥ २५ ५ ५ ५
 उभुनी उभादा ^{२५} सी या ॥ मन
 वीसी माया ^{२५} राखे कसर्व १५ ॥ साय रंबे डी
 ५ ॥ या वी नना चवी धारुली ॥ रूपा वी न सा
 वाली चेषे कैसी ॥ २ ॥ आकता कुक्का क
 कपने आनी की माती ॥ गट म ही तुलपती
 जाती कैसी ॥ ३ ॥ सुईनी पुटे आता ॥
 लपुनी काया ॥ श्रीसुप्रभु राया वर्म ठाके ॥
 ५५५५५५५



७५ नवी ३१ (१४)

की

पाठनाई पोट आवला की नी गाठपं असा आरु
काठ हाता ॥ १ ॥ वापनाई माया कुक आणी गोला

प्रसनकी पुत्र कान असा ॥ २ ॥ पादनाई तपा नी
असा आकी पारा ॥ काहुनी आणी काईरा कोने

हथे ॥ ३ ॥ आवलक्षनी ओह पाठरा परीस ॥

करी आपुल्या असे पाद गाता ॥ ४ ॥

वर्जिता वर्जिता च प... कार बोडा

दाड आना के चा... रा भशु राज दीका

हा जोडो की कर... रात के की ॥

नी गाम दना की अमि जा की जोडी ॥ परी

नाई कपडी कर चा वया ॥ १ ॥ लाद जे ठेवने

जुनाठ की जुणे ॥ करारा घणे देणे नेडिया च

॥ २ ॥ स्त्री लगनी च सो ने ठेवा क धादो नी

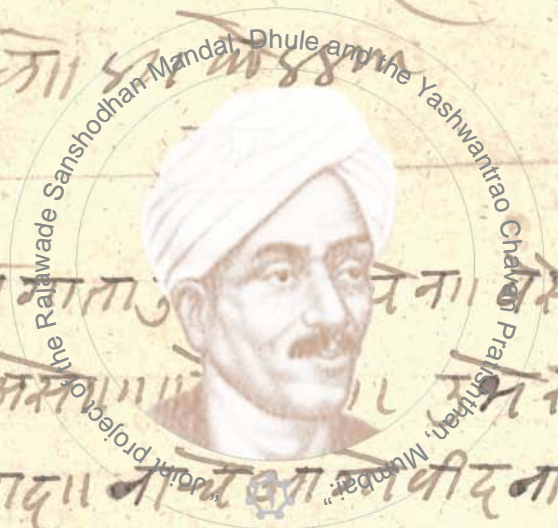
मोडी ता सजग आणी आतां नय ॥ ३ ॥ श्री

सु भ शुरा जे दीदंकी दो लाजा

परी नमी तेथे भक्षायया ॥ ४ ॥ ॥ ४० ॥



आची को बजाको हासंग करीता ॥ ससाग
 च्छातापडी के पा गो ५ रात्रन दी वस पाट पु
 की की चाठा के ॥ क्षन भरन ठल दी ही तु जी ५
 २॥ या च्छेने उता ता जाय को ने के डे: आय
 छे पा छे पुढे व्यापी ये के ॥ ३५ की छ प्र
 राज के की पा ची ने ही मा हा आ द भुत पोठी
 मा वा ये के ॥ ५० के ५४ ॥



ना जलान मा ता ३ च न ॥ गो स ल्या की ली
 नी करी ल अस ॥ ॥ ॥ ॥ सु न रा तु नी था गा
 ला गु ग वा द ॥ नी र सु ली की द नाना चं दे ॥
 ॥ २ ॥ मा रा च्छा ली लाना म च्छे ता वा णी ॥ रा ये
 च्छे पा नी मा छे पुढे ॥ ३ ॥ तु का म ने दे वा
 ना मा ची आ व डी ॥ आ वे वा ली तु डी क थे मा
 जी ॥ ४ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ॥ मा का ॥

~~राजीवजी~~



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com